**यारों के बिन**

सोचा था हमने हमारा भी एक जहाँ होगा

आशिया होगा हमारा हमारा ही शमा होगा

क्या पाता था की तकदीर इस तरह ढाएगी

हमारे सपनो को तोडके इस तरह मुस्कुराएगी.

हम तो निकले थे गुलाब की ताक में

कांटो का क्या कसूर वो तो लिखे ही थे हाथ में

हमने सोचा भी नहीं था की ऐसा वक़्त आएगा

हम यारों से जुदा होंगे और वक़्त न बीत पायेगा

बात बताता हू अपने दोस्तों और यारी की

क्या दिन थे वो जो हँसी में बीतते थे

हम सब हस्ते थे और सभी को सीचते थे

याद आते है वो सुनहरे दिन

सफ़र मुश्किल है अब उन् यारों के बिन …

किशोर पाठक